॥ जैन भवन ॥

तित्थयर

वर्ष : २८ अंक : १० जनवरी २००५

ज्ञान से पदार्थों को जाना जाता है,
दर्शन से श्रद्धा होती है,
चारित्र से कमास्रव की रोक होती है,
और तप से शुद्धि होती है।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant:
Post Box No.5
Lucknow Road
Sitapur-2261001 (U.P.)
Ph : 242017/42397/
42073 (05862)
Gram - Sethia- Sitapur
Fax : 242790 (05862)

Registered Office:
143, Cotton Street
Kolkata - 700 007
Ph : 2238-4329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office:
2, India Exchange Place
Kolkata - 700 001
Ph : 22201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 22200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २८ अंक - १०, जनवरी, २००५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : 2268-2655, Website : www.info@jainbhawan.com
e-mail : info@jainbhawan.com

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें —
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three years : Rs. 160.00, US$ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Smt. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and Printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 007 Phone : 2241-1006

संपादन
डॉ. लता बोथरा,

॥ जैन भवन ॥

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	निर्ग्रन्थ-संघ और श्रमण-परम्परा	साध्वी विजय श्री 'आर्या'	४७३
२.	काकन्दी नगरीः		४७८
३.	जैसलमेर की अनमोल निधि	कुन्दनलाल जैन	४८५
४.	वैर का विपाक		४८९

मूल्य - ५.०० रूपये

कवरपृष्ठ : जैसलमेर के ज्ञान भंडार से प्राप्त श्री सरस्वती देवी का चित्र।

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

निर्ग्रन्थ-संघ और श्रमण-परम्परा

साध्वी विजय श्री 'आर्या'

जैन-श्रमणों का आगमिक एवं प्राचीनतम नाम निर्ग्रन्थ है। आचार्य हरिभद्र ने निर्ग्रन्थ शब्द की व्युत्पत्ति करते हुए कहा है– 'निर्गतो ग्रन्थाद् निर्ग्रन्थः।' ग्रन्थ का अर्थ गाँठ रूप परिग्रह है। धन-धान्यादि बाह्य परिग्रह एवं मिथ्यात्व, अविरति, अशुभयोग रूप आंतरिक परिग्रह से सर्वथा मुक्त श्रमण को निर्ग्रन्थ कहते हैं। उमास्वाति ने लिखा है– 'जो कर्मग्रन्थी के विजय के लिये प्रयास करता है, वह निर्ग्रन्थ है'। आचारांग में शीतोष्ण के त्यागी को निर्ग्रन्थ कहा है। सूत्रकृतांग के अनुसार, 'जो राग-द्वेष से रहित होने के कारण एकाकी है, बुद्ध है, निरास्रव है, संयत है, समितियों से युक्त है, सुसमाहित है, आत्मवाद का ज्ञाता है, विद्वान है, बाह्य और आभ्यांतर दोनों प्रकार से जिसके स्रोत छिन्न हो गये हैं, जो पूजा-सत्कार और लाभ का अर्थी नहीं है, केवल धर्मार्थी है, धर्मविद् है, मोक्ष-मार्ग की ओर चल पड़ा है, साम्यभाव का आचरण करता है, दान्त है, बंधनमुक्त होने योग्य है और निर्ममत्व है, वह निर्ग्रन्थ कहलाता है।' माहण से श्रमण, श्रमण से भिक्षु एवं भिक्षु से निर्ग्रन्थ का दर्जा ऊँचा है।

निर्ग्रन्थ की पाँच श्रेणियाँ :

तत्वतः निर्ग्रन्थ वह है, जिसमें राग-द्वेष की ग्रन्थि का अभाव हो, किन्तु व्यवहार में अपूर्ण होने पर भी जो तात्त्विक निर्ग्रन्थता का अभिलाषी है, भविष्य में वह स्थिति प्राप्त करना चाहता है, उसे भी निर्ग्रन्थ कहा गया है। अतः चारित्र परिणाम की हानि-वृद्धि एवं साधनात्मक योग्यता के आधार पर निर्ग्रन्थ को पाँच भागों में विभाजित किया गया है– १. पुलाक, २. बकुश, ३. कुशील, ४. निर्ग्रन्थ तथा ५ स्नातक। मूल गुण तथा उत्तर गुण में परिपूर्णता प्राप्त न करते हुए भी जो वीतराग-मार्ग से कभी विचलित नहीं होते, वे 'पुलाक' निर्ग्रन्थ हैं। शरीर और उपकरणों के संस्कारों का अनुसरण करनेवाले सिद्धि तथा कीर्ति के अभिलाषी, सुखशील, अविविक्त

परिवार वाला, शबल अतिचार दोषों से युक्त को 'बकुश' निर्ग्रन्थ कहते हैं। इन्द्रियों के वशवर्ती होने से उत्तरगुणों की विराधनामूलक प्रवृत्ति करनेवाला प्रतिसेवना कुशील और कभी-कभी तीव्र कषाय के वश न होकर कदाचित मंदकषाय के वशीभूत हो जानेवाला कषाय 'कुशील' है। सर्वज्ञता न होने पर भी जिसमें राग-द्वेष का अत्यंत अभाव हो और अन्तर्मुहूर्त बाद ही सर्वज्ञता प्रकट होनेवाली हो, उसे 'निर्ग्रन्थ' कहते हैं तथा जिसमें सर्वज्ञता प्रकट हो गई हो, वह 'स्नातक' कहलाता है।

उपर्युक्त पाँच प्रकार के निर्ग्रन्थ सभी तीर्थंकरों के धर्मशासन में होते हैं। बौद्ध-साहित्य में निर्गन्थ :

जैन-श्रमणों का पर्याय निर्ग्रन्थ शब्द निग्गंथ या नियंठ शब्द जैनों का पारिभाषिक शब्द है। भगवान महावीर अपने समय में निग्गंठ नातपुत्तं के नाम से जाने जाते थे। बौद्ध पालि-ग्रन्थों में एवं अशोक के शिला-लेखों में भगवान् महावीर के लिये इस शब्द का कई स्थानों पर प्रयोग हुआ है। बौद्ध-ग्रन्थ 'दीघनिकाय' में लिखा है कि निर्ग्रन्थ ज्ञातपुत्र संघ के नेता हैं, गणाचार्य हैं, दर्शन-विशेष के प्रणेता हैं, विशेष विख्यात हैं, तीर्थंकर हैं, साधु-सम्मत, बहुजन पूज्य, चिर प्रव्रजित एवं वय को प्राप्त हैं।

'मज्झिमनिकाय' में भी भगवान् महावीर को 'निर्ग्रन्थ' शब्द से संबोधित किया है।

बौद्ध-ग्रन्थ मज्झिम में पार्श्वनाथ परम्परा के साधुओं का उल्लेख करते हुए कहा है– 'यहाँ एक चातुर्मास संवर से संयुक्त, सब वारि (पापः से निवारित, सब वारितों का निवारण करने में तत्पर, सब वारि (पाप) से घुला हुआ, सब वारि (पाप) से छूटा हुआ निर्ग्रन्थ (जैन-साधु) है।'

भगवान् महावीर के समय ही उनके श्रमणों के लिये भी निर्ग्रन्थ शब्द का प्रयोग बौद्धों के त्रिपिटक साहित्य में अनेक स्थानों पर देखने को मिलता है। 'दीघनिकाय' में उल्लेख है कि कौशल का राजा पसेनदी (प्रसेनजित) निर्ग्रन्थों को नमस्कार करता था। उसकी रानी ने निर्ग्रन्थों के उपयोग के लिये भवन बनाया ।

'महावग्ग' में लिखा है कि एक बड़ी संख्या में निर्ग्रन्थगण वैशाली में सड़क-सड़क और चौराहों पर दिखाई देते थे।

'उपालि सुत्त' में उल्लेख है कि भगवान महावीर जब नालन्दा में विहार कर रहे थे, उस समय उनके साथ एक बड़ी संख्या में निर्ग्रन्थ साधु थे। वे दीर्घ तपस्वी थे।

बौद्धों के थेर-थेरी गाथाओं से यह भी प्रकट होता है कि उनके साथ जैन-साध्वियाँ भी सर्वत्र धर्मोपदेश देकर मुमुक्षुओं को निर्ग्रन्थ-धर्म में दीक्षित करती थी।

निर्ग्रन्थ धर्म की प्राचीनता :

उक्त उल्लेखों से यह तो स्पष्ट है कि जैन, बौद्ध एवं वैदिक साहित्य में निर्ग्रन्थ शब्द जैन-श्रमण के लिए ही प्रयुक्त हुआ है। स्वयं गौतम बुद्ध ने भगवान् महावीर को निग्गंठ नातपुत्त एवं उनके अनुयायी श्रमणों को निग्गंठ कहकर संबोधित किया है। भगवान महावीर ने भी अपने श्रमण एवं श्रमणियों के लिए स्थान-स्थान पर निग्गंथा, निग्गंथीण, निग्गथीओं कहकर उल्लेख किया है। अतः यह निस्संदेह कहा जा सकता है कि भगवान महावीर के समय यह धर्म निर्ग्रन्थ धर्म के रूप में प्रसिद्ध हो गया था। इस शब्द का अधिकाधिक प्रयोग आगम, चूर्णि, भाष्य, निर्युक्ति आदि जैन साहित्य-ग्रन्थों में होने लगा था, किन्तु इसकी प्राचीनता भगवान् महावीर से पूर्व काल में भी देखी जाती है।

महावीर से पूर्व निर्ग्रन्थ धर्म :

बौद्ध-ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकायं' एवं 'चतुवक्कनिपात' एवं उसकी अट्ठकथा में गौतम बुद्ध के चाचा 'बप्प' नाम के शाक्य को निर्ग्रन्थ श्रावक बतलाया है। जो महावीर एवं बुद्ध से पहले ही इस धर्म के अनुयायी थे। इस बात से सिद्ध होता है कि भगवान् महावीर से पूर्व निर्ग्रन्थों की कोई परम्परा अवश्य थी, जिसका अनुयायी शाक्यवंशी परिवार था और वह भगवान पार्श्वनाथ की ही परम्परा प्रतीत होती है। पालि-साहित्य में बप्प के अतिरिक्त उपालि, अभय, अग्निवेश्यायन आदि और भी कई नाम हैं, जो भगवान पार्श्वनाथ के अनुयायी थे। डॉ. हर्मन जेकोबी ने त्रिपिटक साहित्य के आधार पर यह प्रामाणित किया है कि गौतम बुद्ध के पूर्व अर्थात् भगवान महावीर के जन्म से भी पहले निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय विद्यमान था और उसके हजारों अनुयायी श्रमण निर्ग्रन्थ या निर्ग्रन्थ श्रावक के रूप में

विचरण करते थे। इस कथन का एक अन्य आधार और भी है कि पालि त्रिपिटक में वर्णित सच्चक द्वारा भगवान महावीर को परास्त करने का आख्यान उपलब्ध होता है। सच्चक के पिता भी निर्गन्थ श्रावक थे। उनका निर्ग्रन्थ श्रावक होना यह सिद्ध करता है कि महावीर के पूर्व अवश्य कोई निर्ग्रन्थ परम्परा थी, जिसके ये अनुयायी थे।

विचारों के नये आयाम में सौभाग्यमल जैन ने भी यही तथ्य प्रस्तुत किया है कि, 'यह निर्विवाद है कि भगवान पार्श्वनाथ का अनुयायी सम्प्रदाय ही निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय कहा जाता था। भगवान् महावीर और पार्श्वनाथ का संदेश पूर्व में निर्ग्रन्थ उपदेश के नाम से प्रसिद्ध था।'

बौद्ध-साहित्य के समान ही अनेक हिन्दू-ग्रन्थों से भी निर्ग्रन्थ धर्म की प्राचीनता के प्रमाण मिलते हैं। अथर्ववेद के जाबालोपनिषद् में निर्ग्रन्थ-श्रमणों का उल्लेख आता है–

'यथाजात रूपधरो निर्ग्रन्थो निष्परिग्रहस्तत्वद् ब्रलमार्गे सम्यक् सम्पन्नः।'

तैत्तरीयारण्यकं में भी यही बात कही है—

'कंथा कौपीनोत्तरा संगादीनां त्यागिनो यथाजात'
रूपधराः निर्ग्रन्था निष्परिग्रहाः इति संवर्तश्रुति :।

हिन्दू-पुराणों में जैनधर्म की आस्था को 'देव अर्हन्त' और 'गुरु निर्ग्रन्थ' कहकर पुष्ट किया है।

'मुण्डकोपनिषद्' की रचना 'भृगु अंगरिस' नाम के एक जैन मुनि द्वारा होने का उल्लेख है, उसमें जैन-मान्यता के अनेक पारिभाषिक शब्द मिलते हैं। निर्ग्रन्थ शब्द भी इसमें व्यह्रत हुआ है, उसका विशेषण केश-लोच (शोरोव्रतं विवध द्यैस्तु चीर्ण) दिया है। निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय के नाम से जैन-धर्म ई. पू. दूसरी से पाँचवीं शताब्दी तक भी विख्यात था। बौद्ध-ग्रन्थ 'मणिमेखलै' में जैन-दर्शन को दो भागों में विभक्त किया गया है– 'आजीविक' और 'निर्ग्रन्थ'। आजीवक सम्प्रदाय भगवान महावीर के विरोधी मंक्खलि गोशालक की थी और निर्ग्रन्थ सम्प्रदाय भगवान महावीर स्वामी की।

इसके पश्चात् जब सिकंदर मध्य एशिया में आया, तब 'कियारिशि' नगर में उसने बहुसंख्यक निर्ग्रन्थ संतों को देखा, ऐसा उल्लेख प्राप्त होता है।

सिकन्दर के पश्चात् ई. सन् सात सौ में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने भी निर्ग्रन्थ संघ का उल्लेख अपने यात्रा-संस्मरण में दिया है।

प्रियदर्शी सम्राज अशोक भले ही बौद्ध धर्मानुयायी हो गया था, किन्तु जैन-धर्म के सिद्धान्तो एवं जैन श्रमण-परम्परा का प्रभूत प्रभाव उसके मानस-पटल पर था। इसीलिए उसने अपने स्तंभ-लेखों में यह आज्ञा खुदवाई कि मेरे धर्म महामात्य निर्गन्थों की सुख-सुविधा एवं पर्याप्त सुरक्षा आदि की सुव्यवस्था करेंगे।

पं. मिलापचंद कटारिया ने 'अमरकोष' में भगवान महावीर के नाम जो वर्तमान संस्करणों में लुप्त हो गये हैं, उस भाग को खोज निकाला है, उसमें भी भगवान महावीर को 'सर्वज्ञ, वीतराग, अर्हन, जिन, केवली, तीर्थंकर, स्याद्वादी, निहिनक तथा निर्ग्रन्थाधिपति' कहा है।

प्राकृत विद्या (अक्टूबर-दिसम्बर,२००२) के कवर-पृष्ठ पर एक नग्न योगी की कायोत्सर्ग ध्यान मुद्रा में स्थित मूर्ति का चित्र दिया है, जो यूनान के एथेंस नगर में प्राप्त हुई है, वहाँ यह अमृतशिला का प्रतिमा के रूप में विख्यात है। जर्मन प्राच्य वस्तुशाला के अन्वेषकों ने इस प्रतिमा को ई. पू. छठी शताब्दी का कहा है। यह निर्ग्रन्थ मुद्रा का मूर्ति-शिल्प है।

इतिहास-प्रसिद्ध तथ्य है कि सिकन्दर के अनुरोध पर कल्याण मुनि यूनान गये थे और एथेंस नगर में ही सेंट कौलानस के नाम से आज भी उनकी समाधि विद्यमान है। किन्तु इस मूर्तिशिल्प को इनसे भी प्राचीन माना गया है। यूनान में निर्ग्रन्थ परम्परा का व्यापक प्रभाव रहा है।

इस संपूर्ण अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जैनधर्म की श्रमण-परम्परा में निर्ग्रन्थ शब्द जैन साधुओं के लिये प्राचीनकाल से प्रयुक्त होता आया है। एक तरह से यह जैनधर्म का पारिभाषिक, अर्थपूर्ण शब्द है, जो अन्यत्र कहीं देखने को नहीं मिलता।

काकन्दी नगरी :

जैन और बौद्ध—दोनों अनुश्रुतियों में काकन्दी या काकन्दी नगरी की प्रसिद्धि है। प्राकृत में इस नगरी के नाम के कई रूप पाये जाते हैं; जैसे, काकंदी, कागंदी, काइंदी आदि [१]। जैनों के प्रसिद्ध तीर्थों में इसकी गणना की गई हैं [२]। आचार्य भद्रबाहु ने इसे जैनों के नौवें तीर्थंकर का जन्म स्थान माना हैं [३]। जैन तीर्थ सर्व संग्रह के अनुसार यहाँ नौवें तीर्थंकर भगवान सुविधिनाथ के च्यवन, जन्म, दीक्षा और केवल ज्ञान—ये चार कल्याणक हुए थे [४]। बौद्ध अनुश्रुति में इसे काकन्द नामक मुनि का निवास-स्थान माना गया है (काकन्द निवसो काकन्दी) और इसे माकन्दी, श्रावस्ती, कौशाम्बी, कपिलवस्तु आदि बौद्ध तीर्थों के समकक्ष माना गया है [५]। इस प्रकार अनुश्रुति के अनुसार काकंद नामक कोई प्रसिद्ध मुनि (संभवतः प्राचीन श्रमण-परम्परा में) हुए थे जिनके नाम पर इस स्थान का नामकरण काकंद या काकन्दी किया गया था। जैन कल्पसूत्र में काकंदग (काकंदक) और काकन्दिय (काकन्दिक) नामक एकाध जैन मुनियों का उल्लेख मिलता है [६]। इन जनपदवाची नामों से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन काल से ही इस स्थान के दोनों नाम काकन्द और काकन्दी प्रचलित थे।

काकन्दी को प्रसिद्ध जैन श्रेष्ठी धन्ना की नगरी भी कहते हैं। धन्ना की स्मृति हमारी लोकभाषा में धन्ना सेठ की लोकोक्ति के रूप में अभी तक बची हुई है। किसी-किसी ने भ्रान्तिवश धन्ना और शालिभद्र नामक दो भिन्न व्यक्तियों को एक मान लिया है। लेकिन ज्योति प्रसाद जैन [७] का कथन है कि धन्ना और शालिभद्र दो विभिन्न व्यक्ति थे। धन्ना शालिभद्र के बहनोई एवं परम मित्र थे। दोनों ही धनाढ्य थे, सर्वसुखी थे, और दोनों के जीवन में प्रायः एक साथ धार्मिक क्रांति आयी । दोनों का संयुक्त नाम जैन परम्परा में ऋद्धि-सिद्धि दायक मंगल स्मरण के रूप में प्रचलित हो गया है। राजगृह के धनकुबेर गोभद्र की भार्या भद्रा की कुक्षि से शालिभद्र का जन्म हुआ था। इसकी बहन का नाम सुभद्रा था जो धन्ना से विवाहित थीं। धन्ना के पिता भी धनाढ्य थे, किन्तु व्यापार में

घाटा लगने के कारण परिवार की आर्थिक स्थिति डांवाडोल हो गयी थी। धन्ना ने अपनी सूझ-बूझ से अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ बना ली और राजधानी के प्रमुख धनपतियों में उनकी गणना होने लगी। इस प्रकार धन्ना सेठ का नाम लोक में अकूत धन का पर्यायवाची बन गया। धन्ना के जीवन में किसी प्रकार का कोई अभाव न था, सब प्रकार से एक सुखी व्यक्ति का जीवन था। किन्तु, एक दिन सहसा एक साधु को देखकर उनके मन में विरिक्त का भाव उठा और उनकी दृढ़ निश्चयता ने तुरन्त निर्णय ले लिया। वे अपनी ससुराल राजगृह गये, अपने प्रिय मित्र शालिभद्र को साथ लिया और समवसरण में उपस्थित होकर साथ ही साथ मुनिदीक्षा भी ले ली। इन दोनों मित्रों की स्मृति में आज भी जैन-गृहस्थ यह भावना करते है कि धन्ना-शालिभद्र जी तणी ऋद्धि होय जो। यही धन्नासेठ मुनि वृत्ति स्वीकार करने के बाद धन्ना अणागारि के नाम से प्रसिद्ध हुए। अणागारि का अर्थ होता है यति या मुनि [८]।

भगवती सूत्र [९] काकन्दी में तैंतीस समणोवासग (श्रमणोपासक) का उल्लेख करता है जिससे पता चलता है कि कभी यहां तैंतीस श्रावक या जैन गृहस्थ निवास करते थे। चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर ने काकन्दी में बिहार किया था [१०]। उनके कई शिष्य काकन्दी के निवासी थे। उन शिष्यों के नाम के साथ जनपद-बोधक नाम काकन्दक का उल्लेख मिलता है। काकन्दक का अर्थ है काकन्द का निवासी। जैन कल्पसूत्र की स्थविरावली [११] में जैन श्रमणों के गण, शाखा और कुलों की एक सूची मिलती है। इससे ज्ञात होता है कि व्याघ्रापत्य गोत्र के सुप्रतिबुद्ध काकन्दक ने सुस्थित कौटक के साथ कौटिकगण नाम जैन संघ की स्थापना की थी जिसकी चार शाखाएं थीं। वसिष्ठ गोत्र के ऋषि गुप्त काकन्दक ने मानव गण नामक एक दूसरे जैन संघ की स्थापना की थी। उसकी भी चार शाखाएं थी। भारद्वाज गोत्र के भद्रयशस् ने उडुज्जिया नामक गण की स्थापना की थी जिसकी चम्पिज्जिया (चम्पियका) (भद्रियिका), काकन्दिया (काकन्दिका) और मेहलिज्जिया (मेखलियिका) नामक चार शाखाएं थीं। इन शाखाओं के नाम जनपदों के नाम पर दिये गये हैं। इस प्रकार उडुवाटिक नामक गण की एक शाखा चम्पा में थी,

एक भद्दिया (भद्रिका) में, एक काकन्दी में और एक मेहली (मेखली) में, ध्यानीय है कि उडुवाटिक (या उडुवाडिय) गण की तीन शाखाओं से सम्बन्धित स्थान—चम्पा, भद्दिया और काकन्दी—भागलपुर और मुंगेर मंडल के अन्तर्गत हैं। संभव है कि मेहली भी इसी क्षेत्र का कोई जनपद हो, लेकिन उसकी पहचान अभी तक नहीं की जा सकी है।

बी० सी० भट्टाचार्य[१२] ने काकन्दी की पहचान रामायण में उल्लिखित किष्किन्धापुरी से की है, लेकिन डॉ० दिनेश चन्द्र सरकार[१३] भाषा—शास्त्र की दृष्टि से किष्किन्धा शब्द से काकन्दी का विकास युक्तिसंगत नहीं मानते हैं। उन्होंने मैसूर राज्य में अवस्थित किष्किन्धापुरी को प्राचीन जैन और बौद्ध श्रमणों के कार्य-क्षेत्र से बहिर्गत मानकर इस पहचान को अस्वीकार कर दिया है।

कुछ लोगों ने काकन्दी की पहचान गोरखपुर जिले में नोनखार स्टेशन से दो मील दूर खखुन्दी या खखुन्धी[१४] नामक ग्राम से की है। इसका विवरण इस प्रकार है :

गोरखपुर जिले में दूसरा स्थान खखुन्दी है। इसका प्राचीन नाम किष्किन्धापुर बताया जाता है। जैन यात्री यहां तीर्थयात्रा करने आते हैं। यहां पार्श्वनाथ की मूर्त्ति को लोग नाथ कहकर उसकी पूजा करते हैं। यह स्थान गोरखपुर के पूर्व में २५ कोस पर है[१५]।

गोरखपुर जिले में खखुन्धो नामक स्थान है। इसके प्राचीन नाम काँकड़ी नगरी, काकन्दी पुरी और किष्किन्धापुर हैं। यहां पुष्पदन्त स्वामी (नवें तीर्थंकर) के गर्भ और जन्मकल्याणक हुए थे और यहीं उन्होंने दीक्षा ली थी तथा कैवल्य ज्ञान प्राप्त किया था[१६]।

पणहवागरण की टीका में एक किक्किंधपुर का उल्लेख मिलता है, जिसकी पहचान अभी तक नहीं की जा सकी है[१७]। संभव है किक्किंध से खखुन्धो का विकास हुआ हो। किन्तु, काकंदी और खखुन्धो को अभिन्न मानना किसी भी प्रकार से संगत नहीं प्रतीत होता।

मुंगेर मंडल के जमुई अनुमंडल के अन्तर्गत सिकन्दरा थाने में काकन नामक एक ग्राम है। यही प्राचीन और प्रसिद्ध तीर्थ काकंदी है।

काकन का विकास काकन्द से हुआ है। राहुल सांकृत्यायन[१८] ने इसी ग्राम को काकन्दी माना है। डा० जगदीश चन्द्र जैन[१९] की भी धारणा है कि यही स्थान प्राचीन काकन्दी तीर्थ है। डा० दिनेश चन्द्र सरकार[२०] ने काकन के जैन मंदिर के तीन अभिलेखों का विवरण दिया है। उनमें से एक अभिलेख, जो तीनों में सर्वाधिक प्राचीन है, १५०४ वि० सं० (१४४८ ई०) का है। यह अभिलेख उस मंदिर में प्रतिष्ठापित भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति की पादपीठ में उत्कीर्ण है। दूसरा अभिलेख १८२२ वि० सं० (१७६५ ई०) का है और भगवान पार्श्वनाथ की मूर्ति के आगे प्रतिष्ठापित नौवें तीर्थंकर सुविधिनाथ के दो चरण-चिन्हों के चतुर्दिक उत्कीर्ण है। अभिलेख में इस स्थान को काकन्दी नामक श्रेष्ठ तीर्थ कहा गया है और इसे जिनवर श्री सुविधिनाथ का जन्म कल्याणक स्थान माना गया है। अभिलेख यद्यपि उत्तर मध्यकाल का है, तथापि वह इस स्थान से संबंधित किसी प्राचीन अनुश्रुति का साक्षी है।

संवत् १४८९ में रचित जिनवर्द्धन सूरि रास में उनके पांच वर्ष पर्यन्त पूर्व देश में विचरण कर नाना धर्म प्रभावना का उल्लेख है, जिसमें पावापुरी, नालंदा, कुंडग्राम और काकन्दी की यात्रा का वर्णन है[२१]। जिनवर्द्धन सूरि ने स्वयं संवत् १४६७ में पूरब देश चैत्य परिपाटी की रचना की है, जिसमें ब्राह्मणकुंड; क्षत्रियकुंड और काकन्दी की यात्रा का वर्णन है[२२]। कवि हंस सोम की तीर्थमाला से ज्ञात होता है कि उन्होंने संवत् १५६५ में काकंदी आदि तीर्थों की यात्रा की थी। उन्होंने राजगृह से ३० कोस पर कुंडपुर और वहाँ से ५ कोस पर काकन्दी और वहाँ से ६० कोस पर चम्पानगर का उल्लेख किया है[२३]। तथा विजय देवसूरि के समय में रचित विजय सागर कृत सम्मेत शिखर तीर्थमाला में लछुवाड़ के समीप के कुंडग्राम से काकन्दी ७ कोस तथा बिहार से २६ कोस की दूरी पर होने का उल्लेख है[२४]। संवत् १७५० में सौभाग्य विजय रचित तीर्थमाला में भी बिहार से क्षत्रिय कुंड की दूरी २६ कोस बतलायी गयी है[२५]। इस प्रकार इन यात्रा-विवरणों से भी यह स्पष्ट हो जाता है कि

जमुई अनुमंडल का काकन नामक ग्राम ही प्राचीन काकन्दी है। तीर्थयात्रियों की यह परम्परा कम से कम हजार वर्ष प्राचीन तो है ही।

इन पक्तियों के लेखक ने १९७५ ई० में क्रिसमस के अवकाश में जमुई अनुमण्डल के जैन तीर्थों की यात्रा की थी। उस समय काकन (काकन्दी) के प्राचीन मन्दिर का जीर्णोद्धार हो रहा था। मन्दिर का मंडप निर्मित हो चुका था, शिखरों के निर्माण का काम जारी था। मन्दिर के आस-पास कई सौ मीटर की दूरी पर प्राचीन भवनों के प्रस्तरों, ईंटों और मृद्भांडों के थोड़े-बहुत अवशेष यत्र-तत्र बिखरे पड़े थे। उस स्थानों में अधिकांश पर अब खेती होने लगी है और बहुत से अवशेष नष्ट हो चुके हैं। प्राचीन अवशेषों के बारे में पूछने पर एक ग्रामीण ने राहुल जी के काकन्दी ग्राम में आगमन की चर्चा की। एक ने कुदाल से कोड़कर प्राचीन भवनों की नींव की ईंटों को दिखलाया। ईटों की लम्बाई साढ़े १६ ईंच, चौड़ाई साढे ११ इंच और मोटाई ३ इंच थी और इन्दपैगढ़ की ईंटों के आकार से बहुत-कुछ मिलती-जुलती थीं। उनमें से कुछ तो अत्यन्त जीर्ण हो गयी थीं और जरा-सा भी आघात पड़ते ही टूट जाती थीं।

संदर्भ-संकेत :

(१) पाइअसद्दमहण्णवो, पृ० २३४-२३५.

(२) अयोध्या-मिथिला-चम्पा-श्रावस्ती-हस्तिनापुरे।
कौशाम्बी-काशि-काकन्दी-काम्पिल्ये-भद्रिलाभिधे।।
रत्नवाहे-शौर्यपुरे-कुण्डग्रामेऽप्यपापया।
चन्द्रानना-सिंहपुरे तथा राजगृह पुरे।।
श्रीरैवतक-संमेत-वैभारा-ऽष्टपदाद्रिषु।
यात्रायास्मिंस्तेपु यात्राफलाच्छगुण फलम्।।
— विविधतीर्थकल्प, १/५२-५४

(३) आवश्यक निर्युक्ति, ३८२, दे०, J. C. Jain, Life in Ancient India as depicted in the Jain Canons, Page 291.

(४) तीसरा खंड, पृ० ४८४.

(५) G. P. Malsekera, Dictionary of Pali Proper names, Vol. I, Page 588; Barua and Sinha, Bharhat Inscriptions, Page 18; बिमलचरण लाहा, प्राचीन भारत का ऐतिहासिक भूगोल.

(६) पाइद्दअसमहण्णवो, पृ० २३५.

(७) प्रमुख ऐतिहासिक जैन पुरुष और महिलाएँ, पृ० २४-२६.

(८) पाइअसद्दमहण्णवो, पृ० २९.

(९) भगवती सूत्र, १०/४ ; Life in Ancient India as depicted in the Jain Canons, Page 291.

(१०) अनुत्तरोववैयद साओ (Edited by P. L. Vaidya), पृ. 61,

अन्तगऽदसाओ (Edited by P. L. Vaidya).

Life in Ancient India as depicted in the Jain Canons, Page 291.

(११) कल्पसूत्र की स्थविरावली की सूची की प्राचीनता का समर्थन प्रथम शताब्दी ईसवी के कनिष्ककालीन अभिलेखों से भी हो जाता है (दे०, Life in Ancient India as depicted in the Jain Canons, Page 36.

(12) The Jain Iconography, Page 65.

(13) Geography of Ancient and Medieval India, Appendix II Page 254.

(१४) खखुन्धो ग्राम को आजकल खुखनू नाम से पुकारा जाता है। —ले०

(१५) जगदीशचन्द्र जैन, भारत के प्राचीन जैन तीर्थ, पृ० ४१.

(१६) पं० रामगोपाल मिश्र, तपोभूमि, पृ० १०१.

(१७) Life in Ancient India as depicted in the Jain Canons, Page 297.

(१८) भारतीय विद्या, जुलाई, १९४४ ई०, पृ० ८.

(१९) भारत के प्राचीन जैन तीर्थ, पृ० ५०.

(२०) Geography of Ancient and Medieval India, Page 254.

(२१) अगरचन्द नाहटा, भंवरमल नाहटा, भगवान महावीर का जन्म-स्थान क्षत्रियकुंड, पृ० ८.

(२२) उपरिवत्, पृ० ९.

(२३) उपरिवत्, पृ० ९-११.

(२४) उपरिवत्, पृ० ११.

(२५) उपरिवत्,

जैसलमेर की अनमोल निधि

कुन्दनलाल जैन

शास्त्रों में नव निधियों, ऋद्धियों और सिद्धियों का वर्णन मिलता है पर यहां हमारा उन निधियों, सिद्धियों से कोई तात्पर्य नहीं है अपितु मानवीय दैनिक जीवन से संबंधित निधियों से है जैसे सोना, चांदी, हीरे, जवाहरात आदि जिनका हम शरीर शोभा के लिए उपभोग करते है और दूसरी निधियां वे हैं जो हमारे पूर्वज हमारे लिये सांस्कृतिक विरासत के रूप में छोड गये हैं जैसे पुरातात्विक सामग्री, पांडुलिपियां, मूर्तियां, आयागपट्ट, स्तूप, शिलालेख मूर्ति लेख, यंत्रलेख तथा और बहुत सी ऐतिहासिक सामग्री जो भ. ऋषभदेव से लेकर अब तक श्रमण संस्कृति के उत्थान और विकास में सहायक सिद्ध हुई हैं। काश कि, वह सारी सामग्री उपलब्ध रही होती तो जैनधर्म तथा जैनधर्मानुयायियों की संख्या संसार में सबसे अधिक होती, पर हमारा दुर्भाग्य कि वह सब हम सुरक्षित रूप से बचा नहीं सके। यह सब हमारा ही प्रमाद है।

हमारा प्रमाद और अज्ञान हमें अपने सांस्कृतिक धरोहर के बचाने में सदैव बाधक रही है। पांडुलिपियों के संबंध में हम इतने अधिक प्रमादी और अज्ञानी रहे कि हम उन्हें चूहों, दीमक, सीलन आदि से नहीं बचा सके और वे सदा सदा के लिए नष्ट हो गई अब उन्हें पुनः तैयार करना सूर्य को दीपक दिखाना मात्र रह गया है। साम्प्रदायिक विद्वेष के कारण एक जैनेतर विद्वान् ने कहा था कि यदि किसी धर्म को नष्ट करना है तो सबसे पहले उसके साहित्य को नष्ट कर दो और उसी दुर्भावना का प्रभाव हुआ कि दक्षिण में ताड़पत्र के बहुमूल्य ग्रंथ इतनी अधिक मात्रा में जलाये गये थे कि उनकी आग छह माह तक नहीं बुझी थी। कल्पना कीजिए उन जलाये हुए ग्रन्थों में कितने ऐसे महत्वपूर्ण ग्रंथ रहे होंगे कि जिनके लिए आज हम रहे हैं। हमारी उपेक्षा और अज्ञानता का परिणाम हुआ कि सैकड़ों ग्रंथ चूहे और दीमक चट कर गई और हम

हाथ मलते रह गये और उन अवशेषों को या तो नदियों में बहा दिया गया या यज्ञ में हवन सामग्री के रूप में समर्पित कर दिया।

पुरातत्व की दृष्टि से मथुरा का कंकाली टीला प्रसिद्ध है जहां जैन पुरातत्व की कितनी विशाल प्राचीन सामग्री निकली पर प्राकृतिक आपदाओं से नष्ट भ्रष्ट हो गई या विद्वेष भाव से नष्ट कर दी गई और अब तो नीचताकी हद ही हो गई है कि पुरातात्विक दृष्टि से बहुमूल्य मूर्तियों, धातुओं के पदार्थ चोरी हो होकर विदेशों में लुके छिपे बिककर पहुंच रहे है। शासन ने इन सबके रजिस्ट्रेशन का नियम बना दिया है पर कोई भी इस तरफ ध्यान नहीं देता और चोरी की परम्परा लगातार चालू है। रजिस्ट्रेशन के अभाव में पुलिस भी कुछ नहीं कर पाती है।

मैंने दिल्ली के भण्डारों में स्थित हस्त लिखित पाण्डुलिपियों का विस्तार सूचीकरण आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक तकनीक पर किया है जिसके दो भाग दिल्ली जिनग्रन्थ रत्नावली तथा दिल्ली जिन ग्रन्थ रत्नाकर के नाम से प्रकाशित हो चुके है अभी छह भाग छपने को तैयार पड़े है पर न तो किसी व्यक्ति विशेष को अथवा संस्था विशेष को इनके प्रकाशन की चिन्ता है। शोधार्थी को मूल ग्रन्थ के संपादन में इन सूचियों की नितान्त आवश्यकता रहती है। मैंने अपने ग्रन्थों में cross referance भी दिया है जिससे शोधार्थी को उस प्रति का सन्दर्भ अन्य ग्रन्थों में कहां कहां विद्यमान है यह पता चल सके इससे शोधार्थी को संपादन में श्रम तथा समय की सुरक्षा में बड़ी सहायता मिलती है।

जैसलमेर जोधपुर, पाटन आदि श्वेताम्बर भण्डारों की व्यवस्था बड़ी सराहनीय और सुरक्षित है; यहां पांडुलिपियों को तनिक भी नुकसान नहीं हो पाता है। स्टील की अलमारियों में कीटनाशक डिब्बे लगे हुए है और उन डिब्बों में पांडुलिपियां पूर्णतया सुरक्षित है। राजस्थान के नहीं अपितु पूर्ण भारतवर्ष के सभी विशिष्ट भण्डारों में ऐसी ही सुरक्षा के उपाय होने चाहिए भले ही कार्य व्यय पूर्ण है पर हमें अपने पूर्वजों से प्राप्त अनमोल सांस्कृतिक निधियां तो युगों युगों तक बच सकेगी। पद्मश्री मुनि श्री जिनविजयजी तथा पुण्यविजयजी जैसे मनीषी विद्वानों ने इस दिशा में अनथक प्रयास और परिश्रम किया है जो अति सराहनीय है।

इसी संदर्भ के प्रकरण में मुझे ज्ञात हुआ कि जैसलमेर के भंडार में एक प्राचीनतम ताड़ पत्रिय प्रति सुरक्षित है जिसका नाम है 'विशेषावश्यक भाष्य' जिसके रचनाकार है श्री जिनभद्र क्षमाश्रमण। इसके एकछंद पद्य से मुनि जिनविजय जी ने निर्णय किया था कि यह बुधवार स्वातिनक्षत्र चैत्रसुदी पूर्णिमा शकसं ५३१की है उस समय राजा शिलादित्य का राज्य था। आज शकसं. १९२६ चल रहा है इससे पता चलता है कि इसकी रचना या यह प्रतिलिपि लगभग १४०० वर्ष पूर्व की है। इतनी प्राचीन प्रति विरली ही प्राप्त होती है। यद्यपि प्रति जीर्ण शीर्ण है पर आज तो ऐसी वैज्ञानिक विधियां तैयार हो गई है। जिनसे प्रति को सुरक्षित बनवाया जा सकता है अतः जैसलमेर के अधिकारी इसे दुरुस्त कराकर उसकी फोटो कापी कराकर रख ले जिससे कोई भी शोधार्थी सम्पादन सरलता से कर सकता है। यह ग्रंथ न्याय का प्रतीत होता है संभवतः वैशेषिक न्याय का हो जिस पर जिनभद्रजी ने विशेष भाष्य लिखा होगा। ऐसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ की उपेक्षा नहीं होना चाहिए। यह सब पढ़कर लिखा गया है मूल प्रति यदि देखने को मिल पाती तो और अधिक परिचय दे पाता। पर यदि ग्रंथ सुरक्षित रहेगा तो भविष्य में इसका संपादन अनुवादन आदि हो सकेगा। इनके अतिरिक्त कोटा, अलवर, टोंक, उदयपुर, बीकानेर और चित्तौड़गढ़ में भी शाखाएँ स्थापित करने का विचार था।

पद्मश्री मुनि श्री जिन विजयजी बड़े मनीषी और जैन इतिहास और पुरातत्व के विशेषज्ञ अन्वेषक थे। उन्होंने सैकड़ों नये ग्रन्थ खोजे तथा उनका प्रकाशन और प्रसारण कराया। जोधपुर में उन्होंने राजस्थान ओरएन्टल रिसर्च इन्स्टीट्यूट (राजस्थान पाच्य शोध संस्थान) की स्थापना की थी उसकी शाखा जयपुर में भी थी। अब वह राजस्थान शासन के अधिकार में है। मुनिश्री जी ने अपने ग्रंथ A catalogue of Sanskrit and Prakrit Manuscripts in Rajasthani oriental research Institute Part II C (Jaipur section) की भूमिका में कई महत्वपूर्ण प्राचीन पांडुलिपियों का उल्लेख किया है जिनमें से कातन्त्र स्कूल आफ संस्कृत व्याकरण के विशिष्ट ग्रन्थ 'कर्कशाम्बन्धोद्योत बाल शिक्षा' का भी उल्लेख किया है जो ठाकुर संग्राम सिंह की कृति है। कातन्त्र व्याकरण

का जो विशाल प्रकाशन कुन्द कुन्द भारती दिल्ली से हुआ है उसमें इसका उल्लेख है अथवा नहीं ? मैंने इस ग्रंथ के विद्वान् संपादक एवं कुन्द कुन्द भारती दोनों को ही पत्र द्वारा तथा भूमिका की फोटो कापी भेजकर सूचना भेजी थी पर पता नहीं उस पर ध्यान दिया गया अथवा कूड़े की टोकरी में फेंक दी गई।

मुनिश्री ने अपनी भूमिका में और भी कई विशिष्ट पांडुलिपियों का उल्लेख किया है जिनमें से संभवतः कुछ प्रकाशित हो चुकी हों :- - जैसे

१) श्री मम्मट कृत काव्य प्रकाश की भट्ट सोमेश्वर कृत टीका। यह ताडपत्र पर अंकित है तथा लिपिकाल है सन् ११५८ ई. जो काव्य प्रकाश की रचना (१०५०-११००) के ही समकालीन है अथवा कुछ वर्ष बाद की महत्वपूर्ण कृति है। काव्य प्रकाश की रचना सिर्फ ५८ वर्ष के बाद की मूल्यवान कृति है।

२) चक्रपाणि विजय महाकाव्य श्री लक्ष्मीधर भट्ट ताड़पत्रीय प्रति प्रेम कथा।

३) कर्कशाम्बन्धोद्योत बाल शिक्षा ठक्कुर सग्राम सिंह।

४) वृत्त जाति समुच्चय by वृहांक (प्राकृत संस्कृत मिश्रित) लगभग सातवी सदी ई. का।

५) कवि दर्पण में १४वी सदी ई. के मध्यकालीन इतिहास की परम्पराओं का विवेचन है।

६) पदार्थरत्न मंजूषा by कृष्णभट्ट ने वैशेषिक न्याय परंपरा का महत्वपूर्ण वर्णन किया है।

७) त्रिपुर भारती लघुस्तव टीका by लघुध्वाचार्य ने त्रिपुरादेवी की भक्ति पूर्ण रचना शब्द है।

८) शब्द रत्न प्रतीपिका (एक शब्द के अनेकार्थाकवाची शब्द हैं)।

९) वासवदत्ता by सुबन्धु ने संस्कृत गद्य में प्रेम कथा का वर्णन किया है।

वैर का विपाक

इतना ही नहीं अपितु गुणसेन के चले जाते समय आचार्य ने उसके मस्तक पर हाथ रख आश्वासन देते इस प्रकार कहा:

तपस्वी को आपने अप्रसन्न किया है ऐसा मत माने। हमारे भाग्य में जो यह अंतराय हो तो कोई क्या कर सकता है? हम किसी को शत्रु अथवा किसी को अपना सगा नहीं मानते। सर्वत्र महामंगल ही विलसित होता है यही मानते हैं। और तपस्वी तो जगत के माता-पिता जैसे माने जाते हैं फिर इन्हें अपनी संतान के प्रति बुरा कैसे लग सकता है? गुणसेन ने कृतज्ञतापूर्वक आचार्य को नमस्कार किया और वह अपने महल को लौट गया।

जीवनधारण के लिए अन्न आवश्यक है कि एक या अन्य रूप से भी प्राणी मात्र को पोषण मिलना ही चाहिये। यदि यह सत्य है तो आचार्य कौडिन्य के और ऐसे ही अनेक कुलपतियों के तापस अन्न के अभाव से अथवा नाम मात्र के–एक जौ के दाने को खाकर अथवा लूणाए खेत में विखरे रह गए कणों का आहार करते हुए भी वर्षों तक कैसे जीवित रह सकते हैं?

अग्निशर्मा को दूसरे महीने के उपवास खींचते हुए कोई देखे तो उसे उनका देह मात्र अस्थिपिंजर जैसा ही लगेगा। थोड़ी सी अस्थियों का पिंजरा कुछ कुछ हिरता फिरता अथवा बैठा हुआ है। एक ही धक्के के आघात से वह अस्थियों का जमाया हुआ पिंजर कदाचित् बिखर भी जाए। फिर भी इस तपस्वी के मुख पर जो एक प्रकार की कांति सर्वदा छाई रहती है उसका निरीक्षण करनेवाले को तो अंतर में गहरी से गहरी बहती परितृप्ति आत्मा की अखूट आनंदधारा जीवनधारण में मुख्य वस्तु है ऐसी प्रतीति हुए बिना नहीं रह सकती है।

दूसरे महीने के उपवास स्वीकार करते हुए अग्निशर्मा को आरम्भ में किंचित् क्षोभ तो हुआ था। क्रोध और निराशा ने इन्हें किंचित् पराभूत कर दिया था। परन्तु गुणसेन के आगमन और उसकी क्षमायाचना के साथ साथ ही उस परितृप्ति का अमृतप्रवाह अंग अंग में फिर से बहने लगा। फिर तो

अनाहार मानो उनका स्वभाव ही हो, आहार भिक्षा जिन्हें उपाधि हो, एक उपाधि के साथ साथ निद्रा-तंद्रा- आलस्य जैसी विकृतियों की सारी सेना देह और अंतर को परवश बना रही हो ऐसा उन्हें लगने लगा।

दो दो - तीन तीन महीने के उपवास आदरसे करने वाले इन तापसों ने भूख-तृषा कठोर-निर्मम वस्तु हैं इस प्रकार की जनहृदय पर पड़ी हुआ छाप को मिटा कर साफ कर दिया था। भूखा मनुष्य चाहे जो दुराचार कर सकता है, भूख के दुःख से अधिक दूसरा कोई भी भयंकर कष्ट नहीं ऐसा कहता है परन्तु इन तपस्वियों ने भूख-तृषा का दमन कर संयम में रही हुई प्रभुता की झांकी लोगों को करा दी थी। भोगोपभोग और ऐश्वर्य में रचपच रहती और जीवन की यही साधना है ऐसा मानती जनता को त्याग-संयम के ज्वलंत ऐश्वर्य की महिमा भी जैसी तैसी नहीं है ऐसा इन्होंने विश्वास करा दिया था। भूख, तृषा, संताप आदि संसार की कठोरताएं हैं, वास्तविकता हैं और कच्चापक्का मनुष्य इनके अत्याचार से थरथरा जाता है। परन्तु इसे भी अंकुश में लाया जा सकता है और ऐसे संयममार्ग का पथिक संसार का महारथी बनता है ऐसा भी इन तपस्वियों ने लोगों के हृदय में गहरा उतार दिया था। यही कारण था कि नगर से दूर इस आश्रम में तपस्वियों के दर्शन करने को यथा शक्ति इन तापसों की सेवा-शुश्रुषा करने को नागरिकों के समूह वारंवार आते ही रहा करते थे। क्षुधा पर विजय करने वाली, देह को और देह की वासनाओं को पाले हुए पशु को जैसे वश में रखनेवाले अग्निशर्मा के प्रति सब भक्तिभाव दिखाते थे।

जन समाज इन तापसों को भूख सहनेवाले कहकर इनकी उपेक्षा नहीं करती थी इसका एक दूसरा भी कारण था। जिसने मत्त-पागल हाथी जैसे विषयों पर विजय की ध्वजा रोप दी वे आए दिन आत्मा की अनंत ऋद्धि-सिद्धियों का भंडार अवश्य ही खोज देंगे, ऐसा भी यह समाज मानता था। सांसारिक वैभव की अपेक्षा भी अक्षय आत्मऋद्धि का अधिक मूल्य लोग कुछ कुछ समझने लग गए थे।

अग्निशर्मा और गुणसेन, वस्तुतः अपने युग के दो प्रतिनिधि थे। एक नीचे के घर का तो दूसरा ऊंचे घर का। कुल और जाति के मद में से ये उच्च-

नीच के भेद जन्मे थे। इन पर बराबर प्रहार पड़ते हुए भी घाव लगे क्रूर प्राणी के जैसे घड़ी भर छुपे रह, लाग लगे उसी समय फिर से ये थाप मारते भूलते नहीं है। उच्च-नीच के एक बार भेद पड़ जाने पर ये बढ़ते ही रहते हैं। ब्राह्मण और क्षत्रिय एक दूसरे को ऊंच-नीच मानते इतना ही नहीं अपितु भीतर भीतर नाना वर्ग प्रतिवर्ग खड़े हो जाने से, एक वर्ग दूसरे को हीन कोटि का मानने लगते थे। प्राचीन साहित्य में व्रात्य का उल्लेख मिलता है। क्षत्रियों को ब्राह्मण व्रात्य कहकर अवगणना करते थे और ब्राह्मणों को दूसरे वर्ग भिक्षुक कुल का कहकर तिरस्कृत करते थे। व्रात्य असभ्य और असंस्कारी माने जाने से जहां ये बड़ी संख्या में होते उस भूमि में पैर रखना भी पाप माना जाता था।

ऐसे भेदभाव वाले और छोटे छोटे वतुलों में भी जब कोई ज्ञानी, तपस्वी, पुरुषार्थी का परचा-चमत्कार मिलता तो वे कृत्रिम भेदरेखाएं स्वतः मिट जाती थी। शक्तिशाली को सभी शिरोधार्य मानते।

अग्निशर्मा भिक्षुककुल का था। फिर भी अपनी कठोर तपस्या और देहदमन के कारण वह लोकपूज्य बन गया था। अग्निशर्मा ने ब्राह्मण कुल के मस्तक पर गौरव का चमकता मुकुट धर दिया था। जिस कुल में ऐसे तपस्वी पैदा हों वह कुल केवल भिक्षुक ही नहीं कहा जा सकता है। उसकी निंदा न हो ऐसी छाप लोकमानस पर पड़ी थी। इस प्रकार कृत्रिम मर्यादाएं-संकुचिताएं टूट रही थी।

भारतीय संस्कृति के विस्तार और विकास में ऐसी अनेक घटनाएं छुपी पड़ी हैं।

गुणसेन आज प्रातःकाल से ही सावधान था। शर्मा के दूसरे महीने के उपवास पूरे होने से वह आज भिक्षा के लिए आना ही चाहिए-दूसरी बार भूल न हो इसलिए वह पहले से ही सावधान बना बैठा हुआ था।

शर्माजी को भिक्षा में देने के लिए क्या क्या तैयार कराया जाए वह यही विचार कर रहा था। जब परिचारक को सूचना देने वह जा रहा था कि महामात्य ने वहां प्रवेश किया।

महामात्य घबराया हुआ सा दीख रहा था। इसकी प्रति दिन की गंभीर मुखमुद्रा पर चिंतग्रस्तता की छाया छा रही थी। स्वस्थता का दिखावा करते हुए भी गुणसेन ने उनकी व्याकुलता देख ही ली।

पधारो महामात्यजी। कहते हुए गुणसेन ने अपनी सदा की विनय नम्र शैली में महामात्य का स्वागत किया।

प्रस्तावना अथवा भूमिका रचने की भी महामात्य को आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। सीमाप्रान्त के राजों का भी अब साहस बढ़ गया है ऐसा कहते हुए उन्होंने विश्वास छोड़ा ।

गुणसेन अपने श्वसुर की राजनीति जानता था। महाराजा के सौदार्य का कितनी ही बार दुरुपयोग होता था फिर भी महाराज बड़ा मन कर सब सह लेते थे यह भी वह जानता था।

आज तो महाराज का नहीं, अपितु महाराज के जामाता का शासन चल रहा था। जामाता में भी पानी नहीं है ऐसा भी इन सीमाप्रान्त के राजाओं ने कदाचित् मान लिया होगा और इसीलिए वे मजाक कर रहे हों ऐसा गुणसेन ने तब सोचा। महामात्य के मुख से व्यौरेवार समाचार जानने को इसलिए वह सहज ही अधिक उत्सुक हो गया।

महामात्य भी तब कहने लगाः गुप्तचर समाचार लाए हैं कि हमारे राज्य की सीमा पर जो पर्वत है, उस पर मानतुंग ने अभियान कर रात्रि के समय सोते हुए सैनिकों को धोखे से मार दिया है।

महामात्य और भी कुछ कहना चाहता था, परन्तु गुणसेन बीच ही में बोल उठाः आप इसकी चिंता नहीं करें। आप सेना को तैयार करें। मुझे आज थोड़ा सा आवश्यक काम है इतने में वह भी मैं कर लेता हूं।

अग्निशर्मा को भिक्षा देने की है यह तो उसने महामात्य से नहीं कहा, परन्तु गुणसेन के मन में यही मुख्य चिंता थी। महामात्य को यह बात कह देने की उसे कोई भी आवश्यकता नहीं लगी।

जाते जाते भी महामात्य कह गया सेनापति को तैयार रहने की सूचना मैं देता जाता हूं।

गुणसेन ने मौनभाव से उन्हें अपनी सम्मति दे दी।

सीमाप्रान्त के राजाओं का यह उत्पात मात्र राजनैतिक घटना ही नहीं था। इस समाचार अतिशयोक्तिकता के विचित्र रंग से गहरे होकर नागरिकों में फैलने थे और आफत बिलकुल घर के आंगन में ही आकर खड़ी हो गई

हो ऐसे लोग एकदम भयभीत हो जाते थे। जिसने थाने के चौकीदारों को धोखे से मार डाला हो वे गुणसेन की असावधानी का लाभ उठाकर नगर में भी घुस आएं और अराजकता फैलादें, यह संभव नहीं था। भय की शंका से नगर के राजमार्ग लगभग सूने से हो गए थे।

सेनापति के कानों तक ज्यों ही यह समाचार पहुंचे कि उसने सेना की तैयारी का आदेश दे दिया और स्वयं गुणसेन कुमार के पास पहुंचा। वह उससे नागरिकों की चिंता और शंकाओं का वर्णन कर ही रहा था कि आनात्य के भेजे हुए ज्योतिषी भी वहां पहुंच गए।

विनयमूर्ति गुणसेन इस जंजाल में से जैसे जैसे मुक्त होने का प्रयत्न कर रहा था वैसे ही वह अधिकाधिक उलझन में फंसता जा रहा था। इधर ज्योतिषी उससे कह रहे थे महाराज! अभी का चौघड़िया सर्वोत्तम है। इस घड़ी में प्रस्थान किया जाए तो पद पद पर विजय का उद्घोष होता रहे।

इसी समय अंतःपुर में से आई हुई एक परिचारिका ने बहुत ही धीमी आवाज से कुमार के कान में कुछ कहा। उत्तर में गुणसेन ने मात्र इतना ही कहा कि मैं आता हूं।

संभव है कि नगर भर में जो आतंक छाया हुआ था, उसकी हवा अंतःपुर में भी प्रवेश कर गई हो। ऐसे संग्राम के समय में अधिक से अधिक भय यदि किसी का हो तो अंतः पुरवासिनियों का ही होता है। क्यों कि पकड़ाई राजकुटुम्बी स्त्रियों की रिपुगण बहुत भारी दुर्दशा करते थे।

ज्योतिषीगण कह रहे थे महाराज! इस समय एक फल का विलंब भी नहीं किया जा सकता है। चौघड़िया बीती जा रहा है। आप भले ही अंतःपुर में जा जाएं, फिर भी रणदुंदुभी गरज उठे ऐसी आज्ञा देते जाएं। बस इतना ही प्रस्थान इस समय के लिए पर्याप्त है।

गुणसेन को इस प्रकार के प्रस्थान का कोई विरोध नहीं था। वह ज्योतिषियों को विदा कर अंतःपुर में गया।

अंतःपुर में उसे कुछ अधिक देर हो गई। पहली बात तो यह थी कि महारानी अस्वस्थ थी- आसन्नप्रसवा होने से उनके मन की सांत्वना करने में गुणसेन को थोड़ा समय लगा।

सैन्य, सेनापति आदि तैयार होने से और चौघड़िया की रक्षा करने को वह स्वयं भी युद्ध का साज सजने लगा। इतने में ही उसे फिर अकस्मात् अग्निशर्मा का स्मरण हुआ।

एक अंगरक्षक पास ही खड़ा था। उसने उससे कहा : जाकर देख तो आओ। वे तपस्वी आ गए हो तो उन्हें आदर सहित यहां बुला लाओ।

अंगरक्षक तपस्वी को पहचानता नहीं था। राजद्वार पर भिक्षु, तपस्वी, याचक सैंकड़ो की संख्या में आया करते थे, उनमें से अग्निशर्मा को किस प्रकार पहचाना जाए यह उसको कुछ भी समझ में नहीं आया।

वह कुछ पूछताछ करे जिसके पहले ही तो गुणसेन उसकी कठिनाई को ताड़ गया। वह कहने लगा महीने-महीने के उपवास करनेवाले, एकदम कृश हुए, विलक्षण आकृतिवाले एक आश्रमवासी वहां खड़े हो तो उन्हें बुला लाओ।

अब अंगरक्षक कुछ समझ गया। वह दौड़ता हुआ सदर द्वार की ओर गया। परन्तु वहां तो कोई कृशकाय भिक्षुक दिखाई ही नहीं दिया। पूछताछ पर पता लगा कि तपस्वी तो कुछ ही क्षण पूर्व द्वार के पास आकर की राह देख लौट गये हैं।

अंगरक्षक ने द्वारपाल से सुनी सारी बात गुणसेन को कह सुनाई। इस समय गुणसेन को इतना भारी आघात लगा कि उसे कुछ देर के लिए तो चक्कर ही आ गया।

लौट गए? गुणसेन ने मात्र इतना ही पूछा। परन्तु उसके प्रत्येक शब्द से उसकी अंतःवेदना प्रकट हो रही थी।

इतनी अधिक चिंता और सावधानी रखते हुए भी तपस्वी को दूसरे महीने के अंत में भी खाली हाथ लौटना पड़ा? गुणसेन शीघ्र कदम रखता हुआ महल के बाहर आया।

उसने अधिक चिंता और सावधानी रखते हुए भी तपस्वी को दूसरे महीने के अंत में भी खाली हाथ लौटना पड़ा? गुणसेन शीघ्र कदम रखता हुआ महल के बाहर आया।

उसने एकदम नौकर को आज्ञा की। संग्राम में जाने को तैयार रखा हुआ घोड़ा मंगाया और किसी से कुछ कहे बिना ही वह तपस्वी के पीछे ही चल निकला।

अग्निशर्मा नगर के बाहर पहुंच भी नहीं पाया था कि गुणसेन ने उन्हें जा पकड़ा। घोड़े से उतर कर वह उनके आगे खड़ा हो गया।

तपस्वी महाराज! मेरी थोड़ी सी भूल हो गई। दो हाथ जोड़े नगर का राजा जैसा राजपुरुष विनती कर रहा था। मैं प्रातःकाल से आपकी ही चिंता कर रहा था। परन्तु युद्ध की वार्ता ने मुझे भटका दिया। कृपा कर पीछे लौटें।

वसंतपुर के आते-जाते लोगों ने यह अपूर्व दृष्य देखा। एक ओर ऐश्वर्य की मूर्ति जैसा गुणसेन मस्तक नमा, दोनों हाथ जोड़े खड़ा था। सामने ही एक अस्थिपिंजर खड़ा था। भोग और दीनता मानो आमने-सामने खड़े हुए थे। दीनता के प्रतीक समान तपस्वी से सत्ता और ऐश्वर्य की मूर्ति मानो कुछ याचना करती थी।

मेरी प्रतिज्ञा का भंग मुझसे नहीं हो सकता है। तपस्वी के क्षीण शब्दों में प्रतिज्ञा-पालन की खुमारी गूंजती थी।

गुणसेन भी इस प्रतिज्ञा से अजान नहीं था। हो सकता हो तो कोई मार्ग निकालने और अपने यहां आहार के लिए लौटने का उसने तपस्वी से बारंबार आग्रह किया। परन्तु तप ही जिसका जीवनधन है तप ही जिसकी समृद्धि है वह अपनी प्रतिज्ञा का गौरव कैसे जाने दे सकता था।

अग्निशर्मा की दृढ़ता और तपश्चर्या के प्रति अनन्य श्रद्धा देख गुणसेन का अंतर एकदम द्रवित हो उठा। अपनी असावधानता के लिए पश्चात्ताप करने जितना अभी समय नहीं था। अपने राजमहल में यदि वह होता--नगर के राजमार्ग में प्रजाजनों के सन्मुख यदि वह नहीं होता तो कदाचित् अपने पवित्र अश्रुबिन्दु से तपस्वी के पैर वह पखाल देता।

तपस्वी लौटें ऐसा कोई भी चिन्ह जब नहीं उसे दिखलाई दिया तो भक्ति-गद्‌गद् स्वर से गुणसेन ने उनसे याचना की।

निश्चय ही यह मेरा दुर्भाग्य है कि मेरे महल के आंगन में आपकी चरणरज पड़ते हुए भी मैं आपको आहार भिक्षा नहीं दे सका। अब अधिक

आग्रह करने का मेरा साहस नहीं होता है। परन्तु यदि इस महीने के उपवास के अंत में मेरे यहां पधारेंगे तो मैं अपने सारे दुर्भाग्य को धुल गया मानूंगा।

अग्निशर्मा ने सरल भाव से यह प्रार्थना स्वीकार कर ली।

तीसरा महीना तपस्वी के लिए अग्निपरीक्षा से भी अनेकगुना तीव्र था। अस्थियां तक अंदर से खलभला उठी थीं। आश्रमवासियों ने तो शर्मा के जीवन की आशा ही त्याग दी थी। न जाने कैसे- किस श्रद्धा की शक्ति से भी शर्मा का क्षीण-अति क्षीण जीवनदीपक भारी सुसवाट करते झंझावात में भी नहीं बुझ पाया था।

अब गुणसेन के आग्रह को अमान्य करे और किसी सामान्य नागरिक के यहां से भिक्षा लेने का ही विचार रखे तो ठीक हो ऐसा आश्रमवासी मना रहे थे और अग्निशर्मा के कानों तक भी यह बात पहुंच गई। उग्र तपश्चर्या करनेवाले के निश्चय भी इतने ही दृढ़ होते हैं। इस समय भी गुणसेन के महल से ही जो कुछ आहार मिले वह लेने का आग्रह तपस्वी ने नहीं छोड़ा। गुणसेन को दिया हुआ वचन तो पालन किया ही जाना चाहिये, यही उसका दृढ़ निश्चय रहा।

दूसरी दृष्टि से देखा जाए तो गुणसेन की भक्ति और श्रद्धा के विषय में तपस्या के मन में रंच मात्र भी शंका नहीं थी। पिछली बार जब घोड़े पर चढ़, युद्ध में जाने से पूर्व वह मिलने आया था तो उसकी याचना में जो आत्मग्लानि टपकी पड़ती थी वह तपस्वी ने स्वयं देखी थी। पहले का गुणसेन चाहे क्रीड़ा प्रिय रहा हो, चाहे उसने बहुत ही त्रास उसे तब दिया हो, परन्तु ससुराल में आकर राजकाज संभालनेवाला गुणसेन तो भिन्न ही था, उसका हृदय बदल चुका था।

तीसरे महीने के अंतिम दिन अवश्य ही कटाकटी के थे। गुणसेन भी यह जानता था और तपस्वी के पारणा के दिन की वह प्रतीक्षा कर रहा था। गुणसेन के कारण ही तीन तीन महीने के उपवास खींच जाने वाले तपस्वी अपने निश्चय में इतने ही अडिग थे।

परन्तु संसार सदा सीधी गति से नहीं चलता है। कितनी बार जहाज किनारे पहुंचने की तैयारी में होता है – मात्र एक दो पल का ही विलंब होता

है कि न जाने कहां से बादल आकाश में घिर आते हैं, तूफानी झंझावात बहने लगती है और किनारे लगता जहाज पीछे धकेल दिया जाता है। मानवी की आशाओं और कल्पनाओं का भंग होकर उनका चूरा हो जाता है।

तपस्वी के विषय में भी ऐसा ही हुआ। तीसरे महीने के अन्त और चौथे महीने के उगते प्रभात में ही गुणसेन के यहां पुत्रजन्म हुआ। सारा राजकुटुम्ब और नागरिक ऐसा धमाल में पड़ गए कि तपस्वी के पारण की बात एकदम भुला ही गई। शर्माजी कब आकर लौट गए यह तक किसी को पता नहीं लग पाया।

अग्निशर्मा के रोम-रोम में क्रोध व्याप गया। गुणसेन भक्ति का दंभ कर मेरा प्राण ही लेना चाहता है ऐसी उन्हें प्रतीति हो गई। पुत्र का जन्मोत्सव तो उन्होंने अपनी ही आंखों देख लिया था। सारे नगर में आनन्दोल्लास के तरंग उछालें मार रही थीं। परन्तु ऐसे उत्सव में मान भूलजाने वाला राजपुरुष, तपस्वी के पारणे का दिन भूल जाये, यह उन्हें असंभावित लगा। तीन तीन महीने तक भूख से त्रस्त करानेवाले और प्रत्येक बार कोई न कोई बहाना बना लेनेवाले गुणसेन को नष्ट कर देने की ओर उनकी प्रवृत्ति हो ही गई।

कठोर तपस्या वस्तुतः स्वयं में कोई सिद्धि नहीं है। शांति, क्षमा, मृदुता, करुणा का पोषण करने में वह तो साधनमात्र है यह बात अग्निशर्मा को ठीक ठीक समझ में नहीं आई थी। आचार्य कोडिन्य भी इस विषय में अभी विद्यार्थी जैसे ही थे। तपश्चर्या के माहात्म्य की अपेक्षा भी मनःसंयम, अंतःशुद्धि अधिक मूल्यवान है, और शुभाशुभ गति की नियामक भी यही है, इस ओर इनका बहुत लक्ष्य नहीं था। वे उग्र तपश्चर्या के और सामान्य यम-नियम के मात्र पुजारी थे।

अग्निशर्मा की तप के कारण परम शक्तिशाली बनी हुई मनोवृत्ति को आज उपशमित करने की आवश्यकता थी। इसके देह तथा मन ने परस्पर सहकार करके ही आज यह विप्लव जगा दिया था और उन्हें अपने अंकुश में लाने की उसको आवश्यकता थी। सद्भाग्य से यदि शर्मा को इस समय कोई सद्गुरु मिले होते तो शर्मा सारी बाजी ही जीत जाता।

आश्रमवासी इस समय शर्मा के सामने जाने अथवा उससे क्षेपकुशल पूछने का साहस ही नहीं कर सके। दूर से ही उसे देखकर आश्रमवासियों को विश्वास हो गया कि प्रति दिन की शांति क्षमा, मृदुता आज अग्निशर्मा घुमा आए हैं। उनके नेत्र आग की वर्षा कर रहे हैं।

किसी भी प्रकार से मैं गुणसेन को नष्ट करूं। मेरे प्रति वैर रखनेवाले इस राजपुरुष को कहीं भी सुख-शांति से रहने नहीं दूं। सही एक वृत्ति तपस्वी के अंतर में काले नाग की भांति फुंफाड़ा मार रही थी।

तीन महीनों की अनाहारता और दूसरी ओर वृत्तियों में जागा हुआ यह स्वच्छंद संक्षोभ इन दोनों का विरोध करने में अग्निशर्मा एकदम ही निष्फल हो गया।

वैर ! वैर ! बस वैर का विचार करते करते वह अर्धनिद्रा में पड़ गया।

कुछ देर पश्चात् ही राज्य का पुरोहित सोमदेव बहुत ही धीमे धीमे कदम रखता वहां पहुंचा और जिस दर्मासन पर तपस्वी पसवाड़े पर लेटे हुए थे, उससे थोड़ा दूर रहकर उसने तपस्वी को वंदन किया।

तपस्वी ने उसके कदमों का शब्द सुन एकदम रक्त हुए अपने नेत्र खोले। सोमदेव तत्काल तो कुछ भी पूछने का साहस नहीं ही कर सका। परन्तु फिर सुख-समाचार पूछ रहा हो वैसे विनय से वह बोला।

भगवन्! शरीर बहु क्षीर हो गया दीख पड़ता है।

तपस्वी ऐसे कृश ही होते है। अग्निशर्मा ने संक्षेप में उत्तर दिया।

सोमेश्वर निश्चय ही राजा का प्रतिनिधिरूप से ही आया था। गुणसेन इस समय आने जैसी स्थिति में नहीं था इसलिए नहीं अपितु इस समय तपस्वी कदाचित् क्रोधायमान होगे और कुछ का कुछ कह डालेंगे यही भय से उसे लगा था और इसीलिए वह स्वयं नहीं आया था।

सोमदेव ने कहना आरम्भ किया। तपस्वियों को आहार तो मिल सकता है। आहार होते हुए भी इतना कष्ट क्यों? हमारे राजवी गुणसेन तपस्वियों का आदर करते हैं।

गुणसेन का नाम सुनते ही अंतर में किसी ने शूल चुभा दिया हो वैसे तपस्वी बोल उठे।

गुणसेन का नाम मत लो। वह ऋषिघातक है। सोमदेव को अब अधिक बात करने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुई। गुणसेन की ओर से क्षमा-याचना करने का उसका विचार था। परन्तु उसे लगा कि इस तप्त भूमि पर छींटे डालना निरर्थक हैं।

सोमदेव इसलिए निराशमुख लौट गया और गुणसेन से कह दिया कि तपोवन में तो दावानल प्रगट हो गया है। अग्निशर्मा किसी को माने-सुने इस स्थिति में नहीं है।

परन्तु गुणसेन स्वयं यह समाचार सुनकर भी निराश नहीं हुआ। उसने अवश्य ही भूलें की थी। ठीक पारणे के समय ही वह असावधान रहा था। परन्तु उसके हृदय में तपस्वी को सताने की कोई दुर्भावना नहीं थी।

कुछ ही देर पश्चात् वह स्वयं तपोवन में पहुंचा। पहले वह आचार्य से मिला। जो कुछ घटना घटी थी वह सब सरल भाव से उसने उन्हें सुना दी। आचार्य को बहुत ही खेद हुआ। परन्तु यह सब अकस्मातों की ही परम्परा थी, यह निश्चय करने में उन्हें देर नहीं लगी।

गुणसेन को वहीं बैठाकर आचार्य अग्निशर्मा के पास पहुंचे। उन्हें भी लगा कि आज का तपस्वी बीती कल तक का अग्निशर्मा नहीं है। उनके चेहरे पर भयानक रौद्रभाव तांडव कर रहा था। तप की सारी सिद्धि और तेज को उन्होने वैरवृत्ति में बदल दिया था।

वे कहंने लगे कि देहदमन अर्थशून्य है। जिसने देह को दुःख देने में कुछ भी कसर नहीं रखी, स्वाद और मुख पर भी जिसने विजय पाई, उसकी मनोवृत्ति में प्रसन्नता और करुणा के समुद्र ही लहरें मारते होने चाहिए। परन्तु अग्निशर्मा तो अभी तक भी इस साधनामार्ग से एकदम अजान ही रहे हैं।

आचार्य ने सांत्वना देने की दृष्टि से अग्निशर्मा को कहना आरम्भ किया : हे वत्स। तुमने बहुत सहा है। सामान्य मनुष्य हार खा जाए वैसे कष्टों का तुमने सदा ही सामना किया है। आज तुम्हारी अन्तिम परीक्षा है। भवजल तैरने को जिस नौका का तुमने सहारा लिया है उसके पेंदे में क्रोध-

कथायादि का मोटा छिद्र तो नहीं रह गया है यह तुम्हें आज स्वयम् ही खोजना-देखना है। तुम्हारी महा मूल्यवान पूंजी व्यर्थ तो नहीं जा रही है। तुम्हारी साधना तुम्हें उन्मार्ग में खींच नहीं ले जाए इसकी सम्हाल तो तुम्हें स्वयं ही करना है।

परन्तु आज इस उपदेश के लिए तो अवसर ही नहीं रह गया था। और दिन तो आचार्य ने ऐसी तात्विक बातें कही होती तो वह उनका आदर करता–उपदेश को जीवन में उतारने का ही प्रयत्न करता है। परन्तु अब तो बहुत देर हो चुकी थी। अग्निशर्मा ने वैर के विपरीत मार्ग पर अपना प्रयास प्रारम्भ कर दिया था। गुणसेन को किसी भी रीति से अधःपतन के पेंदे में पछाड़ देने का निर्णय कर लिया था।

दूसरे को आधोगति अथवा प्रगति के मार्ग की ओर खींचने के पूर्व स्वयं को ही उस मार्ग का अप्रणा बनाना होता है। गुणसेन को सर्वनाश की गति में खींच ले जाने की इच्छा रखनेवाला अग्निशर्मा स्वयं इसमें पहले गिर पड़ेगा इसका तो उसे मान ही नहीं रहा।

अग्निशर्मा ने आचार्य को जो उत्तर दिया उससे आचार्य भी हताश हो गए। उसने कहा: मैं अब इस गुणसेन का मुंह भी देखना नहीं चाहता। यह मेरा आज का शत्रु नहीं है। मैं मानता था कि वह वैर भूल गया होगा और मेरा सत्कार करने को तैयार हुआ होगा। परन्तु उसने मुझे तीन-तीन बार आमंत्रण देकर मेरा जो अपमान किया है उससे बदला लिए बिना अब मैं नहीं रहूंगा। वैर का कमंडल आकंठ भर गया है इतना ही नहीं अपितु अब वह छलक भी रहा हा। सहनशीलता की भी सीमा होती है। मैंने भी वैसे ही शांति, क्षमा और उपासना करके देखा जैसा आपने कहा था। मुझे उसमें से वैर का विष ही हाथ आया है। यह विष मैं प्रसन्नता से पी जाऊंगा। मैं ख्वार होऊं तो भले होऊं परन्तु एक बार तो इस गुणसेन को बता ही दूंगा। इस भव से नहीं तो दूसरे भव में भी उसको नहीं छोड़ूगा। मेरे पास अब खोने जैसा है ही क्या?

आचार्य को लगा कि इस तपस्वी को अपने तप की भी कुछ कीमत नहीं है। वैरवृत्ति ने आज इसको उनमत बना दिया है। शुद्धिविहीन तपश्चर्या इसी प्रकार मुनि को कचर डालती है। तप का अभिमान, तप से प्राप्त किया

बल आज अग्निशर्मा को कालज्वर रूप परिणाम हुआ है। इसको बचाने का काम इतना सुसाध्य नहीं है।

वृद्ध कौडिन्य गहरा निश्वास डालते खड़े हो गए।

परन्तु फिर भी जाते-जाते उन्होंने पूछा बस! निर्णय कर ही लिया है ना? राजपुरुष को क्षमा देने जितनी उदारता नहीं दिखा सकते हो, तपस्वी? मैं तुम्हारे हितैषी रूप से तुम्हें सलाह देता हूँ कि तप से प्राप्त की ऋद्धि को प्रकार व्यर्थ मत खोओ।

आप जानते ही हो कि मेरा निश्चय अचल होता है। मैंने इसी दर्भासन पर इसी प्रकार भूखे-प्यासे बैठे रहकर प्राण विसर्जन करने का निश्चय कर लिया है। मैं राजपुरुष को क्षमा नहीं कर सकता हूं। जो होने को है वह भले ही हो। वैर ही अब मेरा मुद्रालेख है।

अग्निशर्मा को उन्होंने सारी परिस्थिति बता दी। अग्निशर्मा के पास जाने से तो उसके वैर में घृताहुति ही रहेगी ऐसा कहते हुए उन्होंने उन्हें लौटा दिया। गुणसेन भी अपनी भूलों का पश्चात्ताप करता हुआ और मन ही मन में तपस्वी से क्षमा याचना करता हुआ अपने महल को लौट आया।

प्राचीन इतिहास पर यद्यपि आज गाढ़ धुएं के स्तर पर स्तर छाए पड़े हैं, फिर भी इस घुम्मस में भी तपोवन, तपस्वी और विश्वकत्याष्कानी नरपुंगवों की ज्योति नक्षत्र के समान झल झलाती दीखती है। जिस समय की यह कथा है तब की सभ्यता और समृद्धि की काव्यमय प्रशस्तियों की बात यदि हम जाने भी देवें तो भी प्रकाश, ज्योतिः अथवा दीप्ति के पीछे तल्लीन होकर इसी की एक मात्र उपासना करनेवाला वर्ग इस देश में कुछ कम नहीं था। तप बिना पार पाने का दूसरा कोई भी उपाय नहीं है यह सीधी सी बात उसे बराबर समझ में आ गई और ज्ञान की चर्चा भी स्थान स्थान और समय समय पर चलती रहती थी। इसी के फल स्वरूप संस्कारी प्रदेशों से तपोवन, वट वृक्ष की भांति जहां तहां उग गए थे।

भगवान महावीर का जीवन संबंधी जो भी विवरण मिलता है उसमें दीक्षा लेने के पश्चात् उन्होंने मोराग सन्निवेश निकटस्थ दुईज्जंत आश्रम में थोड़े दिन निवास किया था ऐसा कहा जाता है। मोराग सन्निवेश के नाम पर

से ही ऐसा लगता है कि वह कोई बड़ा नगर नहीं होगा और न कोई छोटा सा गांवड़ा ही। मात्र निवेश याने झोपड़ियों का एक झुंड कहा जा सके ऐसा ही स्थान होगा। कदाचित् शांति, एकांत और प्राकृति सभ्यता के कारण ही वहां दुईज्जंत आश्रम की स्थापना हो गई होगी।

भगवान महावीर ने आश्रम में प्रवेश किया तब वहां ज्वलंतशर्मा नामक आश्रमपति रहते थे। महावीर प्रभु के पिता के साथ इनका कुछ संबंध भी होना चाहिए। याने ऐसे आश्रम के संचालकगण, अपने समय के कर्त्ता हर्त्ता जैसे माने जाने वाले अधिकारियों के साथ संपर्क रखते थे और क्षत्रिय-राजपुरुष इन आश्रमों की सहायता करते थे। जनसमुदाय का सद्भाव ही इन आश्रमों की सम्पत्ति थी।

भगवान महावीर को दूर से जाते दुईज्जंत आश्रम का कुलपति खड़ा हो गया उनकी अगवानी के लिये वह सामने गया और पूरे पूरे सम्मान पूर्वक उन्हें आश्रम में लिवा लाया। कैसी कैसी आशाएं इस कुलपति ने अपने मन में बांधी होगी, यह तो कुछ भी कहीं नहीं जा सकती है। परन्तु जिस क्षत्रियकुमार ने राजऋद्धि त्यागकर संन्यास स्वीकार कर लिया था, वह इस आश्रम को पवित्र करेगा - अपनी तपश्चर्या के प्रभाव से आश्रम को तीर्थभूमि बना देगा, आश्रम की सब आज्ञाओं आकांक्षाओं को मूर्तिमंत बना देगा ऐसे स्वाभाविक मनोरथ उसके मन में कुछ कुछ स्फुरित हुए ही होंगे।

क्रमशः

NAHAR
5/1 Acharya Jagadish Chandra Bose Road,
Kolkata - 700 020
Phone: 2283 3515, Resi: 2246 7757

D. SANDIP & COMPANY
107, Ratnadip Building, Phone : 2369 0054
Resi- Oberoi Gardens Thakur Village
Kandewali, East Mumbai, 'C' Wing flat No. 14/1404.
Phone : (R) 2886 8940

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2220-8105/2139,(Resi) 2329-0629/0319

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
Azimganj House
7, Camac Street, Kolkata - 700 017
Ph: 2282-5234/0329

M/S. METROPOLITAN BOOK COMPANY
93, Park Street, Kolkata - 700 016
Ph: 2226-2418, (Resi) 2475-2730, 2476-8730

SURANA MOTORS PVT. LTD.
84 Parijat, 8th Floor, 24A, Shakespeare Sarani
Kolkata - 700 071, Ph: 2247-7450, 2283-4662

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue, Kolkata- 700 029, Ph: 2464-1186,

ASHOK KUMAR RAIDANI
M/s. Ashok Trading Corporation
Dealing in All types of Blanket and General Order Supplier
6, Temple Street, Kolkata - 700 072
Ph: 2237-4132, 2236-2072

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
93/4 Karaya Road, Kolkata - 700 019
Ph: (O) 2220 8967, (Resi) 2247 1750

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Kolkata - 700 071
Ph: 2282-8181

CLUB BITES
236A, A.J.C. Bose Road
Kolkata - 700 020
Vegetarian Restaurant
At Lee Road, Call - 2280 1582

APRAJITA
Air Conditioned Market
Kolkata - 700 071
Phone : (O) 2282-4649,
(Resi) 2247-2670

DR. K.B. SINGH (M.B.B.S.)
67, S.N. Pandit Road, Kolkata - 700 025
Ph: 2455-2081, 2454-7127, Chember- 2268-8670/4207

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Kolkata-700 001
Ph: (B) 2220-2074/8958 (D) 2220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2220 9755
Resi: 2464-3235/1541, Fax: (033) 2464 0547

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Kolkata - 700 007
Ph: 2268-8677, 2269-6097

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
28, B.T. Road, Kolkata - 700 002
Ph: (O) 2268-9356/0950 (Fact). 2557-1697/7059

COMPUTER EXCHANGE
Park Centre' 24 Park Street
Kolkata - 700 016, Ph: 2229-5047/9110

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazar Street, Kolkata - 700 001
Ph: 2248-5146/6941/3350, Mobile: 9830032021

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment, 15/1 Chakrabaria Lane,
Kolkata - 700 026, Phone : 2476-1533639582

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No.4
Kolkata - 700 071, Ph: 2229 6256/8730/1029
Resi: 2247 6526/6638/22405126
Telex: 2021 2333, ARBI IN, Fax : 2226 0174

PRADIP KUMAR LUNAWAT
P-44 Dr. Sundari Mohan Avenue
Kolkata - 700 014, Phone : 2249-0103

M/S. POLY UDYOG
Unipack Industries
Manufacturers & Printers of HM; HDPE,
LD, LLDPE, BOPP PRINTED BAGS.
31-B, Jhowtalla Road
Kolkata - 700 017, Phone: 2247 9277, 2240 2825
Tele Fax: 22402825

SAROJ DUGAR
Fancy saree, bed covers
34/1J. Ballygunge Circular Road
Kolkata - 700 019, Phone: 2475 1458

VEEKEY ELECTRONICS
Madhur Electronics, 29/1B, Chandni Chowk
3rd floor, Kolkata - 700 013
Ph: 2352-8940/334-4140,(Resi) 2352-8387/9885

KRISHNA JUTE COMPANY
Jute Broker & Dealer
9, India Exchange Place, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-0874/9372, 2221-0246

ELECTO PLASTIC PRODUCTS PVT. LTD.
22 Rabindra Sarani, Kolkata - 700 073
Phone : 2236-3028, 2237-4039

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd, Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Kolkata - 700 001
Phone : 2220-5229/5121

MOUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrella
45, Armenian Street, Kolkata - 700 001
Ph : (Shop) 2242-4483/2248-8086,
(O) 2268-1396/30924653, Fax : 2271-2151,

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Kolkata - 700 007, Phone : (033)2270-1329, 2232-1033
Fax : 91-33-2702413

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Kolkata - 700 001 Ph: 2235-2076, 2235-5701

MUSICAL FILMS (P) LTD
9A, Esplanade East, Kolkata - 700 069

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 007
Ph: Gaddy- 2273-1766, 2268-8846
Mobile: 9831028566, Resi : 2355-9641/7196

B.W.M.INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178, 25779, 25778
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151-202256 (Bikaner)

DR. NARENDRA L. PARSON & RITA PARSON
18531 Valley Drive
Villa Park, California 92667 U.S.A.
Phone : 714-998-1447714998-2726,
Fax : 7147717607

V.S. JAIN
Royal Gems INC.
632 Vine Street, Suit# 421
Cincinnati OH 45202
Phone : 1-800-627-6339

RANJIT SINGHI
Singhi Exports
(P) Ltd.
P15 New C.I.T. Road
Kolkata - 700 073

RAJIB DOOGAR
305, East Tomaras Avenue
Savoy, IL 61874-9495
USA
Ph : 001-217-355-0174/0187, e-mail : doogar@uiuc.edu

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
C/o Shri P.K. Doogar,
Amil Khata, P.O. Jiaganj, Dist: Murshidabad, Pin- 742123
West Bengal, Phone: 03483-56896

M/S. SETHIA OIL INDUSTRIES LTD.
Manufactureres of De oiled cakes & Refined oil.
Lucknow Road, PO. Sitapur - 261001 (U.P.)
Phone: 05862/42017/42073

M/S. BEEKAY VANIJYA PVT. LTD.
City Centre, 19, Synagogue Street
5th Floor, Room No. 5342535, Kolkata - 700 001
Phone: 2210-3239, 2232-0144, 2238-7281
Fax: 033-2210-3253 (M) 9831001739
e-mail : bktarfab@satyam.net.in

जो हिंसात्मक प्रवृत्ति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

DEEPAK KUMAR SANDEEP KUMAR NAHATA
Dealers in Diamond
Manufactures of Precious & Semi Precious Ornaments
Burtolla Street, Kolkata - 700 007,
Phone: (G) 2268-0900 (M) 9830094325

DHANDHIA BROS
6/1 Hara Prasad Dey lane, Kolkata - 700 007
Phone: (R) 2269-6241/2950 (O) 2239-0581

SHRI MANILAL RAJENDRA KUMAR JAIN (DUSAJ)
Dealers : Diamond, Precious Stones, Semi Stones &
Readymade Ornaments,
6A, Rabindra Sarani, Kolkata - 700 001
Phone: 2237 5869/6476
(Mobile): 98301017091, 9830142191

With Best Compliment from :-
SURANA WOOLEN PVT. LTD.
MANUFACTURERS * IMPORTERS * EXPORTERS
67-A, Industrial Area, Rani Bazar, Bikaner - 334 001 (India)
Phone : 22549302, 22544163 Mills
22201962, 22545065 Resi
Fax : 0151 - 22201960
E-mail : suranawl@datainfosys.net

In the memory of Badindrapat Singhji Dugar
GAUTAM DUGAR
34/1/K, Ballygunge Circular Road
Kalkata - 700 019
Phone: (O) 2475-1109/6835
(R) 2474-3566, (M) 31022126

ARIHANT JEWELLERS
Shri Mahendra Singh Nahata
M/s BB Enterprises
8A, Metro Palaza, 8th Floor 1,Ho Chi Minh Sarani,
Kolkata - 700 071, Ph: 2288 1565 / 1603

M/s. MUKUND JEWELLERS
manufactures of American Diamand
Jewellery, Gold & Silver Goods &
Dealers in imitation Jewellery
P-37A, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Ph: 2232 3876

KAMAL SINGH KARNAWAT
7,Khelat Ghosh Lane, Kolkata - 700 006
Dealers in Diamonds Precious Stones
Ph: (R) 2259-3885, (M) 03332391278

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H. M. T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Kolkata - 700 007 (Phone : 2239-7607)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Kolkata - 700 020, Ph: (Resi) 2455-3586

M/S. PARSON BROTHERS
18B, Sukeas Lane, Kolkata - 700 007
Phone: 2242-3870

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Kolkata - 700 001
Ph: (O) 2248-8576/0669/1242
(Resi) 2225-5514, 2237-8208, 2229-1783

LILY SUKHANI
7, Bright Appartment, 7 Bright Street
Flat No. 7 C., Kolkata - 700 019 , Phone : 2287-0448

M.L. CHOPRA & CO.
Freight & Chartering Brokers
12-B, N. S. Road; Kolkata - 1
PH : 2220 5059 / 2220 1130, EMAIL : freya@cal.vsnl.co.in

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments &Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Kolkata - 700 007
Ph: (O) 2268-4755, (Resi) 2274-0817

ABL INTERNATIONAL LTD.
1, Shakespeare Sarani, Kolkata - 700 071.
Ph: 2282-7615/7617/2726, Gram : Sudera

M/S. SHREE SILK STORE
House of :
Banarasi Sarees & Velvet Articles etc.
P-25, Kalakar Street, Jain Katra
Kolkata - 700 007
Phone: 2268 2671, 666 4422

SHIV KUMAR JAIN
"Mineral House"
27A, Camac Street, Kolkata - 700 016
Ph: (Off) 2247-7880, 2247-8663,
Res) 2247-8128, 2247-9546

MAHENDRA TATER
147, M. G. Road
Kolkata - 700 007, Phone : 2227-1857

M/S. SARAT CHATTERJEE& CO. (VSP) PVT. LTD.
Regd Office 2, Clive Ghat Street, (N. C. Dutta Sarani)
2nd Floor, Room No. 10, Kolkata - 700 001
Ph: 2220-7162, 2261-0540, Fax : (91)(33)2220 6400
e-mail: sccbss@cal2.vsnl.net.in

APARAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106, Ph: 2665-3666/2272
e-mail: Suravee@cal2.vsnl.net.in / sona@cal3.vsnl.net.in

SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Kolkata - 700 007, Ph: 2269-1408

BADALIA GEMS PVT. LTD.
BADALIA HOUSE
66/3, Beadon Street, Kolkata - 700 006
Phone : (O) 2554-8999/8997 (R) 2533-9985
Fax : 033 5548999, e-mail : shashibadlia@usa.net

CREATIVE
12, Dargah Road, Post Box 16127, Kolkata - 700 017
Ph: 2240 3758 / 3450 / 1690 / 0514
Fax : (033) 2240 0098, 2247 1833

JAIPUR EMPORIUM JEWELLERS
Anandlok
227 A. J. C. Bose Road, Kolkata - 700 020
Ph: 2280-0494, 2287-2650, Resi : 2358-0602, (M) 31074937

RAJENDRA KUMAR GANDHI
Jewellers & Bankers
A-38/1 Gol Kothi, Varanasi
Phone : (O) 2333224 (R) 2454125, 2586460

FANCY VELVET CO.
154 Dharamtalla Street, Kolkata - 700 013
Phone : (O) 2215-0523 (R) 2284-8719 (M) 9831029197

MILLY CHORDIA
2303, 3rd nail, 6th Floor, Desence Colony
Indria Nagar, Bangalore-- 38, Phone : 2229-7608

DR. G. C. GULGULIA
10, middleton Street, Kolkata - 700 071
Ph: (R) 22291925 (C) 22174695

CALTRONIX
12 India Exchange Place, 3rd Floor, Kolkata - 700 001
Phone: 2220 1958/4110

ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध, अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।

KUSUM CHANACHUR

Founder : Late. Sikhar Chand Churoria

Kusum
QUALITY PRODUCT

Our Quality Product of :

Anusandhan
Kolkata Nasta
Badsha Khan
Picnic
Raja
Shubham
Bhaonagari Ghantia
Jocker
Lajawab
Papri Ghantia
Rim Jhim
Tinku

MANUFACTURED BY

M/s. K. K. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Dist: Murshidabad
Pin No.- 742122, West Bengal
Phone No.: 03483-253232,
Fax No.: 03483-253566

KOLKATA ADDRESS:

36, Maharshi Debendra Road, 3rd Floor Room No.- 308
Kolkata - 700 006, Phone No.: 2259-6990, 3093-2081
Fax No.: 033-2259-6989, (M) 9830423668

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of pumping stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in place where Columbı eared to tread')

S P M L

Engineering Life

SUBHASH PROJECTS & MARKETING LIMITED

113 Park street, Kolkata 700 016
Tel : 2229 8228, Fax : 2229 3882, 2245 7562
e-mail : info@subhash.com, website: www.subhash.com

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Kolkata-700016 Ph:(033)2229-8228. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi-110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011) 684 6003. Regional Office: 8/2 Ulsoor Road, Bangalore 560-042 Ph: (080) 559 5508-15, Fax: (080) 559-5580.

Laying pipelines across one of the nation's driest region, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreswar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of Paradip.

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

शस्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
अर्थात् अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Kolkata - 700 071

Phone:

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

2226-0881
2226-0883
2226-6283
2226-6953

Mill

BANSBERIA

Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 2634-6441/2644-6442
Fax: 2634 6287

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का हैं।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College, Kolkata

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayapuri, Phase - 1, New Delhi - 110 064
Phone: 28114496, 28115086, 28115203
Fax: 28116184
e-mail: bhansali@mantraonline.com

With Best Compliments..... ?

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence.
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer
From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv lever.
Current Transformer upto 66kv.
Dry type Transformer.
Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, KOLKATA - 700 016
PHONE: 2229-7346/4553, 2226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

शुभ कामनाओं सहित —

मनुष्य जीवन में ही सत्य कार्य करने का अवसर उपलब्ध होता है।

अहिंसा अमृत है, हिंसा विष है।

अनाम

PICK UP ALL U WANT UNDER ONE ROOF

▶▶Groceries ▶▶ Edible Oils ▶▶ Personal Care ▶▶ Imported Pastas, Chocolates, Sauces, Gift Items, etc. ▶▶Hygiene ▶▶Baby Care ▶▶Stationery ▶▶other Household Items

Stop 2 Shop

AT YOUR COMPLETE SUPERMARKET

NAHAR PARK
45/4A, Chakraberia Road (S), Kolkata - 700025
(Near Jadu Babu's Bazar)
Phone: 24544696

Store Timings : 7.00 am to 9pm
All days open except Thursday

FREE HOME DELIVERY

All Prices BELOW M.R.P.

PARKING AVAILABLE

With Best Compliments

Since 1926

B.C. JAIN JEWELLERS PVT. LTD.

22, Camac Street
3rd floor, Block-A
Kolkata - 700 007
Phone: 2283 6203 / 6204 / 0056
Fax : 2283 6643
Resi : 2358 6901, 2359 5054

Postal Registration No. SSRM Kol/RMS/WB/R.N.P.-070/2004-2006.
Vol. XXVIII. NO.10 TITTHAYARA January 2005
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under R.N. No. 30181/77

ज्ञानी वही है जो किसी भी प्राणी की हिंसा न करें। सभी जीव जीना चाहते है मरना कोई नहीं चाहता अतः संसार के त्रस और स्थावर सभी प्राणियों को जाने या अनजाने में न मारना चाहिये, न दूसरों से मरवाना चाहिये, ना ही मन वचन काया से किसी को पीड़ा पहुँचाना चाहिये।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions

17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 2666-7212/7225